शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2013

सम्पादकीय

हिंदी की प्रयोजनीयता

भूमंडलीकरण के बाद तेजी से बढ़े बाजारवाद के कारण सुप्त पड़ी हिन्दी कुलाचें भरने लगी है। आधुनिक जनसंचार माध्यमों ने इसमें महती भूमिका अदा की है। न्दिी की हो रही श्रीवृद्धि किसी की सद्इच्छा का परिणाम नहीं है, वरन् बाजार की धन कमाने की प्राथमिकता ने उसे आज सिर माथे पर बैठाया है। हम इस बात को लेकर गर्व से कितना ही सिर उंचा कर लें कि आज हिन्दी जीवन के सभी क्षेत्रों में अपने पैर तेजी से पसार रही है और सभी ने उसको अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया हे, बहुत बड़ा भ्रम है। यह भ्रम भी बाजारवादी संस्कृति द्वारा ही निर्मित किया गया है। वास्तव में हिन्दी आज बाजार की जरूरतों को पूरा करने पर खरी उतर रही है। माइक्रोसॉफ्ट कंपनी को हिन्दी के साफ्टवेयर बनाने की प्रेरणा देने वाला भारत बहुत बड़ा बाजार है। आज हिन्दी बाजारोन्मुख हुई है, परंतु शिक्षा के बाजार में आज भी अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। आधुनिक विज्ञान के अध्ययन–अध्यापन में हिन्दी स्थिति अत्यंत दयनीय और शोचनीय है। विद्यालयीन और महाविद्यालयीन स्तर पर आधुनिक विज्ञान के अध्यापन का समस्त कार्य अंग्रेजी में अथवा अंग्रेजी से कठिन हिन्दी भाषा में अनूदित पुस्तकों से ही संपन्न कराया जाता है।

यद्यपि आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने विश्वस्तरीय प्रतिभाएं उपलब्ध कराइ हैं, परंतु जब भारत के स्कूलों और कॉलेजों में विज्ञान विषयों की शिक्षा पद्धति की दशा देखते हैं, तब हिन्दी के बढ़ते चरण पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। भारत में विज्ञान शिक्षा के तेवर विषय पर डॉ.राय अवधेश कुमार श्रीवास्तव कहते हैं कि हमारे स्कलों में विज्ञान की तर्वमान शिक्षा पद्धति अधिकतर छात्रों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए महज समस्याओं का समाधान करने और उन्हें रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाली ही है। विज्ञान विषयों को पढ़ने वाले अधिकतर छात्र इसलिए विज्ञान नहीं पढ़ते कि उन्हें इसमें कोई विशेष रुचि होती है, बल्कि वे अपने कैरियर को सजाने–संवारने के लिए ही विज्ञान विषयों का चुनाव करते हैं। यही विषय उन्हें इंजीनियरी या मेडिकल की प्रवेश परीक्षाओं में मददगार सिद्ध होते हैं।

हमने वैज्ञानिक साधनों जैसे दूरदर्शन, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन इत्यादि में प्रयुक्त की जाने वाली हिन्दी पर अपना सीना गर्व से तान लिया, लेकिन आधुनिक विज्ञान के विविध आयाम जेसे चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरी, बायोटेक्नालॉजी, माइक्रो बायोलॉजी, लाइफ साइंस, नैनोटेक्नालॉजी के अध्ययन–अध्यापन में हिन्दी की प्रयोजनीयता सिद्ध नहीं की। इस बारे में हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावाली की समस्याएं निबंध में गोपाल शर्मा कहते हैं कि, ''भारत के वैज्ञानिकों में ऐसे बहुत कम हैं जो अंग्रेजी शब्दावली के क्लासिज्म और उसकी निग्रहण वृत्ति के प्रति आक्रोश रखते हों, किंतु ऐसे वैज्ञानिक बहुत हैं जो हिन्दी के नये शब्द निर्माण पर प्रायः रोष व्यक्त करते हैं ओर अवसर मिलते ही ऐसे शब्दों को जबड़ा–तोड़ या जीभ–मरोड़ आदि की संज्ञा दे डालते हैं।

पूरी दुनिया में शायद भारत ही ऐसा देश होगा जहां विज्ञान केवल अंग्रेजी भाषा समझता है। पिछले दिनों वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद सीएसआईआर ने हीरक जयंती आविष्कार पुरस्कार हेतु आवेदन आमंत्रित किए थे। यद्यपि विज्ञापन हिन्दी भाषा में था, परंतु उसमें यह शर्त लिखी थी कि आवेदक को अपने आविष्कार का विवरण अधिकतम 5000 शब्दों में अंग्रेजी में ही देना होगा। उन्हीं आवेदनों पर विचार किया जाएगा जिनके साथ आवश्यक ड्राइंग और अंग्रेजी में अधिकतम 5000 शब्दों में आविष्कार का विवरण संलग्न होगा। इससे समझा जा सकता है कि विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं की क्या स्थिति है। सीएसआईआर के लिए प्रयोग महत्वपूर्ण नहीं हैं, वरन् भाषा मुख्य है।

आधुनिक विज्ञान के पठन–पाठन–अन्वेषण में यदि हिन्दी की प्रयोजनीयता बढ़ानी है तो उसके लिए विषय विशेषज्ञों और भाषा के जानकारों को संयुक्त प्रयास करना होंगे। इंजीनियरी शिक्षा में हिन्दी माध्यम आलेख में वे.शेषन लिखते हैं कि ''अगर इंजीनियरी शिक्षा हिन्दी में करनी है तो उसके लिए नवीं कक्षा से ही भौतिक तथा रसायनशास्त्र में हिन्दी के प्रामाणिक शब्दों का समावेश होना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को भविष्य में कठिनाई न हो। प्रत्येक औद्योगिक संस्थान में, चाहे वह निजी क्षेत्र में हो या सरकारी क्षेत्र में, वहां पर पत्रों के शब्द और उनके उत्पादन के स्पेसिफिकेशन हिन्दी में ही होनी चाहिए। इसी प्रकार पॉलिटेक्निकों और इंजीनियरिंग कॉलेजों में ऐसे अध्यापक नियुक्त होने चाहिए जो हिन्दी माध्यम से ही इंजीनियरी पढ़ाएं और जो पुस्तकें तैयार की जाएं उनमें पुर्जों और उपकरणों के लिए प्रामाणिक हिन्दी शब्द प्रयुक्त होने चाहिए। पॉलिटेक्निक और इंजीनियरी आदि स्नातक कोर्स की पुस्तकों को हिन्दी में अनूदित करने का अभी से प्रयास आरंभ कर देना चाहिए।''

आधुनिक विज्ञान के विविध आयामों में हिन्दी की प्रयोजनीयता को लेकर अनेक चुनौतियां मौजूद हैं। बाजार की हवा का रुख देखकर हम यह न समझ लें कि अब हिन्दी पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हो चुकी है। विज्ञान में होने वाली नवीनतम खोजों को आम जनता की भाषा में उस तक पहुंचाने का विस्तृत कार्यक्षेत्र खुला पड़ा है। जिस दिन हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों में विज्ञान विषय की पुस्तकें हिन्दी भाषा में अध्यापन भी हिन्दी भाषा में और अनुसंधान का लेखन भी हिन्दी भाषा में होने लगेगा तब उसकी प्रयोजनीयता विश्वव्यापी सिद्ध होने में जरा भी देर नहीं लगेगी।

- डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे